श्रेणीबन्धाद्वितन्वद्भिरस्तम्भां तोरणस्रजम् ।

सारसैः कलनिर्ह्रादैः क्वचिदुन्नमिताननौ ।।41।।

अन्वयः.श्रेणीबन्धात् अस्तम्भां तोरणस्रजम् वितन्द्भिः कलनिर्ह्रादैः सारसैः क्वचित् उन्नमिताननौ (जग्मतुः)।

अनुवाद (आकाश में उड़ते हुए) पंक्ति में बँधे होने के कारण मानो आधार-स्तम्भ के बिना ही लटकने वाली तोरण (नगर के बाहर का द्वार) की माला का दृश्य उपस्थित करने वाले तथा मधुर शब्द करने वाले सारस पक्षियों के कारण (उन्हें देखने के लिए) कभी ऊपर आकाश की ओर को मुख उठाए हुए (वे दोनों चले जा रहे थे)।

टिप्पणियां

श्रेणीबन्धात् श्रेण्याः बन्ध इति श्रेणीबन्धः (षष्ठी तत्पुरुष), तस्मात् एक पंक्ति में बँधे होने के कारण (सारस पक्षी श्रेणी बनाकर उड़ रहे थे)। हेतु को दिखाने के लिए पंचमी का प्रयोग।

अस्तम्भाम् नास्ति स्तम्भः (आधारः) यस्याः सा (बहुव्रीहि), ताम्। तोरणस्रजम् का विशेषण है। वह (तोरण माला) जो किसी आधारभूत स्तम्भ (खम्भे) के बिना ही लटक रही है। बिना सहारे अपने-आप लटक रही है।

कलनिर्ह्रादैः कलं (मधुर) निर्ह्रादं (शब्द) येषां ते (बहुव्रीहि) कलनिर्ह्रादाः, तैः, सारस पक्षियों द्वारा जिनका स्वर मधुर था। मधुर शब्द करने वाले सारसों द्वारा।

उन्नमिताननौ उन्नमिते (उद् उपसर्ग नम् धातु णिच् क्त) आनने ययोः तौ (बहुव्रीहि)। जिनके मुख ऊपर आकाश की ओर उठे हुए थे।

तोरणस्रजम् तोरणे (बहिर्द्वारे) स्रजम् (मालां) (सप्तमी तत्पुरुष)। नगर के बहिर्द्वार पर लटकने वाली माला अथवा किसी के स्वागत में खड़े किए गये कृत्रिम द्वारों पर बँधी हुई माला। माला स्तम्भ या द्वार के सहारे लटकी है। परन्तु आकाश में उड़ने वाले सारस पक्षी द्वार अथवा तोरण के बिना लटकने वाली माला के समान लग रहे थे क्योंकि वे एक पंक्ति बाँध कर उड़ रहे थे। संस्कृत साहित्य में तोरण को पुष्प मालाओं से सुसज्जित बताया जाता है क्योंकि तोरण की शोभा पुष्पमालाओं से होती है। अब भी विशिष्ट अतिथियों के सम्मान में मार्गों में तोरण बनाये जाते हैं और उन्हें पुष्पमालाओं से अलंकृत किया जाता है। महाकवि भासकृत स्वप्नवासवदत्तम् नाटक में भी तोरणमाला का वर्णन प्राप्त होता है।''**...मुखतोरणलोलमालां भ्रष्टां क्षितौ त्वमवगच्छसि.....।**''

सारसैः हेतु के कारण तृतीया। सारसों के कारण ही राजा तथा रानी ने मुख ऊपर उठाया था।